संचार

विद्यार्थियों की कलम से...

तिथि– अश्विन–कार्तिक / शुक्ल पक्ष / एकादशी / संवत 2081 / युगाब्द 5126, अक्तूबर 2024

READY FOREVER

जे.सी. बोस विश्वविद्यालय ने 57वां स्थापना दिवस मनाया, पूर्व छात्रों की भूमिका पर जोर

फरीदाबाद। जे.सी. बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद ने मंगलवार को अपना 57वां स्थापना दिवस पूरे उत्साह के साथ मनाया, जिसमें विश्वविद्यालय की समृद्ध विरासत और भारत के वि. निर्माण क्षेत्र में इसके पूर्व छात्रों के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित किया गया। इस समारोह में छात्रों, शिक्षकों और पूर्व छात्रों की असाधारण उपलि. ब्धियों का सम्मान किया गया।

साल 1969 में इंडो–जर्मन वाईएमसीए इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग के रूप में स्थापित इस प्रतिष्ठित संस्थान को 2009 में विश्वविद्यालय का दर्जा मिला था। इस अवसर पर संस्थान ने 56 वर्षों की अपनी यात्रा और विश्वविद्यालय के रूप में 16 वर्षों की शानदार उपलब्धियों का जश्न मनाया।

कुलपति ने की पूर्व छात्रों के योगदान की सराहना

विश्वविद्यालय के कुलगुरु, प्रो. राजीव कुमार ने अपने संबोधन में वाईएमसीए मॉब की सराहना करते हुए कहा कि फरीदाबाद के पहले तकनीकी संस्थ. ान के रूप में वाईएमसीए ने भारत के विनिर्माण क्षेत्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने पूर्व छात्र संघ से आग्रह किया कि वे विश्वविद्यालय में अपने किसी एक प्रतिष्ठित पूर्व छात्र के नाम पर लड़कों का छात्रावास बनाने में सहयोग करें। प्रो. कुमार ने अगले चक्र में नैक श्ए श मान्यता प्राप्त करने और अनुसंधान व बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए केंद्रीय अनुदान प्राप्त करने की अपनी महत्वाकांक्षाएं भी साझा कीं।

विश्वविद्यालय के आठवें कुलगुरु बने प्रो. राजीव कुमार, गर्मजोशी से स्वागत

प्रोफेसर राजीव कुमार, जो अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के पूर्व सदस्य सचिव रहे हैं, उन्होंने जे.सी. बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद के आठवें कुलपतिके रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। हरियाणा राज भवन, चंडीगढ़ से जारी अधिसूचना के अनुसार, हरियाणा के राज्यपाल और विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, प्रो. असीम कुमार घोष ने प्रो. राजीव कुमार की नियुक्ति तीन वर्ष की अवधि के लिए की है। प्रो. कुमार ने अपनी प्राथमिकताओं को स्पष्ट करते हुए कहा कि उनकी मुख्य प्राथमिकता राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)–2020 के महत्वपूर्ण प्रावधानों को प्रभावी ढंग से लागू करना और साथ ही चल रही शैक्षणिक और बुनियादी ढाँचा विकास परियोजनाओं को गति प्रदान करना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रतिष्ठित संस्थान में कुलगुरु के रूप में सेवा करना उनके लिए गर्व की बात है।

पूर्व छात्रों ने साझा किए अनुभवः

समारोह में आत्मीय विश्वविद्यालय, राजकोट के कुलपति प्रो. राकेश कुमार मुद्गल और वाइ. ंएमसीए मॉब पूर्व छात्र संघ के अध्यक्ष सरदार सुखदेव सिंह ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत की। प्रो. मुद्गल ने कहा, किसी भी शैक्षणिक संस्थान की आत्मा उसका शिक्षण हो. ता है, जबकि भौतिक संरचना उसका शरीर है।ष उन्होंने फरीदाबाद के औद्योगिक विकास में विश्वविद्यालय की ऐतिहासिक भूमिका की सराहना करते हुए इसे देश का शीर्ष संस्थान

ORIENTATION

सत्रारंभ 2025

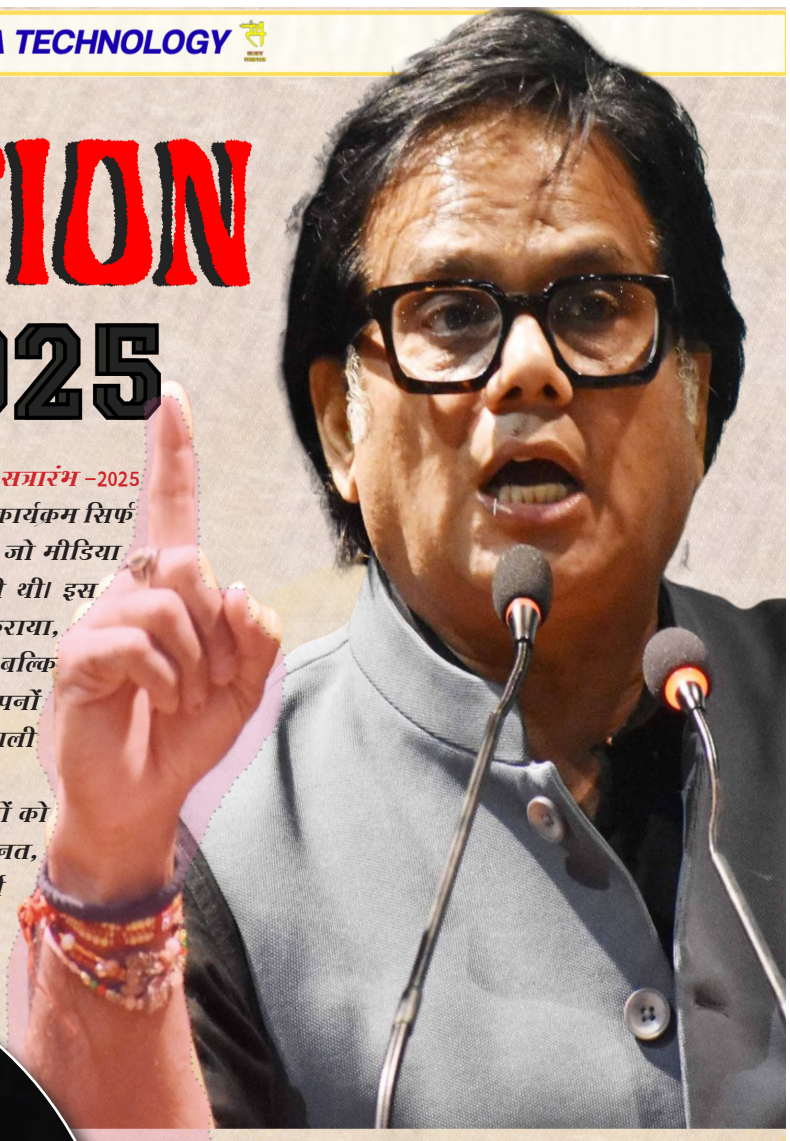

जे.सी. बोस विश्वविद्यालय के मीडिया विभाग द्वारा आयोजित सत्रारंभ –2025 कार्यक्रम में नए छात्रों का स्वागत किया गया। यह पाँच दिवसीय कार्यक्रम सिर्फ एक रस्म अदायगी नहीं, बल्कि एक प्रेरणादायक शुरुआत थी, जो मीडिया विद्यार्थियों को उनके सुनहरे भविष्य के लिए तैयार कर रही थी। इस कार्यक्रम ने न केवल नए चेहरों को एक-दूसरे से परिचित कराया, बल्कि उन्हें यह भी सिखाया कि मीडिया सिर्फ एक पेशा नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है। यह मंच अनुभवी पत्रकारों और युवा सपनों के बीच एक सेतु बना, जहाँ अनुभवियों के ज्ञान ने आने वाली पीढ़ी को सफलता के मार्ग पर चलने का होसला दिया।

सत्रारंभ-२०२५ ने छात्रों के मन में उठने वाली जिज्ञासाओं को शांत किया व उन्हें यह विश्वास दिलाया कि कड़ी मेहनत, जुनून और नैतिकता ही वह मंत्र हैं, जो उन्हें प्रतिस्पर्धी दुनिया में अलग पहचान दिलाएंगे।

"जीवन में एक लक्ष्य तय करो और उसे पाने के लिए जी–जान लगा दो, क्योंकि तुम्हें कोई रोक नहीं सकता। अनुशासन को अपनाओ, वही तुम्हारी सबसे बड़ी ताकत है और वही तुम्हें तुम्हारी मंजिल तक ले जाएगा। उन आलोचनाओं को गले लगाओ जो तुम्हें बेहतर बनाने में मदद करती हैं, क्योंकि वे तुम्हें तुम्हारी कमियां दिखाती हैं। सफलता की राह में आने वाली हर चुनौती को स्वीकार करो।"

चित्रा त्रिपाठी
पत्रकार, एबीपी

"पत्रकारिता केवल किताबी ज्ञान से हासिल नहीं की जा सकती। सिर्फ किताबें पढ़कर कोई पत्रकार नहीं बनता। यह एक कौशल है, जिसे निरंतर सीखने, अभ्यास और समर्पण के माध्यम से निखारा जाता है। पत्रकारिता में अवसरों की कमी नहीं है, लेकिन सफलता केवल वही पाते हैं जो सत्य और नैतिकता के मार्ग पर चलते हैं। हमारा लक्ष्य समाज को बेहतर बनाना और राष्ट्र के उत्थान में योगदान देना होना चाहिए।"

अशोक श्रीवास्तव
पत्रकार, डीडी न्यूज

हरियाणा मुख्यमंत्री के ओएसडी डॉ राज नेहरू *ने मीडिया विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए प्रेरणादायक शब्दों में कहा कि सफलता की नींव प्रवेश के पहले दिन से ही रखी जानी चाहिए। आज से ही अपने भविष्य के लिए तैयार रहें, क्योंकि जो तैयार होगा, वही सफल होगा। निरंतर प्रयास, आत्ममंथन और समय के साथ कदम मिलाने की जरूरत है। उन्होंने जोर देकर कहा कि आज की तकनीकी दुनिया में प्रतिस्पर्धा बेहद तीव्र है। हर दिन आपको यह सोचना होगा कि आप इस टेक्नोलॉजी की दुनिया में कैसे आगे निकल सकते हैं और अपनी पहचान बना सकते डजिटल मीडिया, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा जर्नलिज्म, को सीखने और अपनाने में सक्रिय रहें।*

विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो राजीव कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लाने के लिए हमें शिक्षा को कौशल विकास के साथ जोड़ना होगा। मीडिया विभाग को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ मिलकर कठिन परिश्रम किया जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के प्रावधानों को लागू करने की प्रतिबद्धता जताई, जिसके तहत विश्वविद्यालय इस दिशा में नेतृत्व करेगा और एनईपी की क्रांतिकारी सोच को जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास करेगा।

समाचार एजेंसी पीटीआई में डिजिटल सेवाएं, एआई इंटीग्रेशन और फैक्ट चेक में मुख्य संपादक प्रत्युष रंजन ने एआई मीडिया पर मास्टर क्लास में विद्यार्थियों को तकनीकी बारीकियों से अवगत कराया।

विशिष्ट अतिथि **उद्योगपति एवं समाजसेवी एस.एस.बांगा** *ने कहा कि जीवन में एक लक्ष्य तय करो और उसे पाने के लिए जी–जान लगा दो, क्योंकि तुम्हें कोई रोक नहीं सकता। अनुशासन को अपनाओ, वही तुम्हारी सबसे बड़ी ताकत है और वही तुम्हें तुम्हारी मंजिल तक ले जाएगा। सफलता की राह में आने वाली हर चुनौती को स्वीकार करो। याद रखो, तुम अपनी किस्मत के खुद मालिक हो।* **कुलसचिव प्रो.अजय रंगा** *ने संचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी विभाग के विभिन्न कोर्सों में दाखिला लेने वाले प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को कहा कि जीवन और समय का मूल्य समझें, कमी को बहाना न बनाएं। विश्वविद्यालय के शैक्षिक माहौल में रमें, इसके संसाधनों का उपयोग कर करियर की ऊंचाइयों को छुएं। किसी कमी को लेकर कुंठित न हों।*

जे.सी. बोस विश्वविद्यालय को मिलेगी नई दिशा, उद्योग की जरूरतों के अनुसार बदलेगा पाठ्यक्रम

धीरेन सिंह। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा नीति के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के बाद, जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के नए नेतृत्व ने संस्थान के लिए एक महत्वाकांक्षी और भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। 32 वर्षों के तकनीकी और अकादमिक अनुभव से लैस, नए कुलपति ने स्पष्ट किया कि उनकी सर्वोच्च प्राथ. मिकता विश्वविद्यालय को केवल डिग्री देने वाले केंद्र के रूप में नहीं, बल्कि उद्योग की बदलती मांगों के साथ कदमताल करने वाले एक गतिशील ज्ञान केंद्र के रूप में स्थापित करना है। एक विशेष साक्षात्कार में, उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन, नवाचार, उद्यमिता और पाठ्यक्रम में स्वायत्तता के महत्व पर अपने विचार साझा किए। संचार विद्यार्थी ध ीरेन सिंह से बातचीत के कुछ अंश . . .

पहली प्राथमिकत- राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क का कार्यान्वयन

विश्वविद्यालय कुलगुरु प्रो राजीव कुमार ने कहा कि मेरी पहली प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क की मूल भावना हमारे संस्थान में पूरी तरह से लागू हो। मैं इस संस्थान को हरियाणा के एक प्रमुख संस्थान से आगे ले जाकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पटल पर स्थापित देखना चाहता हूँ। यह मेरा प्राथमिक लक्ष्य रहेगा। यह कदम अकादमिक और व्यावसायिक शिक्षा के बीच की दीवारों को तोड़कर छात्रों के लिए अवसरों के नए द्वार खोलेगा।

नौकरी मांगने वाले नहीं, देने वाले बनें

भारत के युवा इंजीनियरों और प्रौद्योगिकीविदों में इतना ज्ञान और क्षमता है, फिर भी हम माइक्रोसॉफ्ट या गूगल जैसी कंपनी क्यों नहीं बना पाए? क्योंकि हमें विरासत में जो प्रणाली मिली, उसने हमें कभी यह सिखाया ही नहीं कि हम भी ऐसा कुछ कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि छात्रों के मन में उद्यमिता का बीज बोया जाए, ताकि वे भविष्य में लाखों लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा कर सकें।

समर्पण ही सफलता की कुंजी है

मीडिया विभाग के माहौल और छात्रों के समर्पण से प्रभावित होकर संचार टीम के काम करने के तरीके को सराहा। छात्रों को संदेश देते हुए उन्होंने कहा, आप जिस क्षेत्र में हैं, जब तक आप उसमें पूरी लगन और करने की इच्छा नहीं रखेंगे, तब तक सफलता हासिल करना बहुत मुश्किल है। मुझे यहां के छात्रों में जो समर्पण दिखा, वह अत्यंत सुखद है।

उद्योग और अकादमी के बीच की दूरी होगी खत्म

हमें अपनी स्वायत्तता की शक्ति को पहचानना होगा। हम किसी के ऊपर बोझ क्यों बनें? हमें यहाँ के स्थानीय उद्योगों की जरूरतों, हमा. रे छात्रों की रुचि और उनकी क्षमताओं को समझना होगा और उसके अनुसार अपने पाठ्यक्रम को आकार देना होगा। यही सच्ची स्वायत्तता है।

नई शिक्षा नीति 2020 और छात्रों के लिए इसके लाभ

नई शिक्षा नीति 2020 के सबसे लाभकारी पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए, उन्होंने राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क की संरचना को समझाया। राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क में शिक्षा को विभिन्न स्तरों में विभाजित किया गया है। जैसे, 10वीं कक्षा लेवल 3 है, 12वीं 4.5 है, और चार साल की डिग्री पूरी करने वाला छात्र लेवल 6 पर बाहर आता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि जो भी आप सीखते हैं, चाहे वह अकादमिक हो या व्यावसायिक, उसका क्रेडिट आपके अकादमिक बैंक में जुड़ता है। उन्होंने इसके व्यावहारिक लाभ को समझाते हुए कहा, इसका फायदा यह हुआ कि यदि एक व्यावसायिक पा. ठ्यक्रम का छात्र लेवल 4 पूरा करता है और एक सामान्य शिक्षा का छात्र 12वीं करके आता है (जो भी लेवल 4 है), तो दोनों के बीच गतिशीलता संभव है। व्यावसायिक धारा का छात्र सामान्य शिक्षा में आ सकता है और सामान्य धारा का छात्र व्यावसायिक कौशल सीख सकता है। यह प्रणाली शिक्षा के पुराने ढाँचे को तोड़कर एक एकीकृत और लचीला मार्ग प्रशस्त

विकसित भारत में इंजीनियर, शिक्षकों और समाज की भूमिका पर सेमिनार

फरीदाबाद। विकसित भारत के राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इंजीनियरों, शिक्षकों और समाज की सामू. हिक जिम्मेदारी पर बल देने हेतु, जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वा. ईएमसीए, फरीदाबाद ने द इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), फरीदाबाद लोकल सेंटर के सहयोग से एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया। इस सेमिनार में उद्योग जगत के विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और छात्रों ने हिस्सा लिया।

विकसित भारत समन्वय और नवाचार की आवश्यकता

सेमिनार का विषय ष्विकसित भारत रू इंजीनियरों, शिक्षकों और समाज की भूमिकाष् था, जिसका उद्देश्य देश के समग्र विकास में इन सभी हितध ारकों के योगदान पर चर्चा करना था। कार्यक्रम का उद्घ. ाटन दीप प्रज्वलन से हुआ, जिसके बाद द इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) के चेयरमैन आर.आई.एस. ओबेरॉय ने स्वागत भाषण दिया। वहीं, सेमिनार की रूपरेखा प्रो. प्रदीप कुमार डिमरी ने प्रस्तुत की। जे.सी. बोस विश्वविद्यालय के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट अधिकारी प्रो. राजेश आहूजा ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोध ान में कहा कि विकसित भा. रत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए इंजीनियरों, शिक्षकों, उद्योग और समाज के बीच आपसी समन्वय बेहद जरूरी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इन सभी क्षेत्रों को मिलकर काम करना होगा।

विभिन्न परिप्रेक्ष्य और शोध–पत्र

सेमिनार में कई विशेषज्ञ वक्ताओं ने अपने विचार साझा किए। श्री संजीव शर्मा (श्री सीमेंट) ने अवसंरचना विकास के प. रप्रेक्ष्य पर, जबकि आर. जे.पी. मल्होत्रा (भारतीय वाल्व्स) ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (डैडम्) की भूमिका पर प्रकाश डाला। अरावली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट के निदेशक प्रो. आशीष सोती ने नवाचार, गुणवत्ता प्रणाली और शैक्षणिक उत्कृष्टता के महत्व को समझाया। इस अवसर पर उद्योग से जुड़े इंजीनियरों और छात्रों ने भी अपने शोध–पत्र

विश्व आत्महत्या रोकथाम सप्ताह पर विशेष जागरूकता पहल

फरीदाबाद। जे.सी. बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (वाईएमसीए), फरीदाबाद ने विश्व आत्महत्या रोकथाम सप्ताह के अवसर पर एक महत्वपूर्ण जागरूकता और लक्षित हस्तक्षेप कार्यक्रम का आयोजन किया। यह पहल जिला नागरिक अस्पताल, फरीदाबाद के सहयोग से की गई, जिसका मुख्य केंद्र मानसिक स्वास्थ्य, आत्महत्या रोकथाम और मादक पदार्थों के दुरुपयोग पर था।

कार्यक्रम का उद्घाटन विश्वविद्यालय के चिकित्सा अधिकारी, डॉ. अंकुर शर्मा के संबोधन से हुआ। इस बात पर जोर दिया कि 15 से 29 वर्ष की आयु वर्ग में मृत्यु के प्रमुख कारणों में आत्महत्या शामिल है, लेकिन उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि जाग. रूकता, शीघ्र पहचान और समय पर सहायता के माध्यम से इसे पूरी तरह से रोका जा सकता है।

छात्रों को परस्पर सहयोग की संस्कृति अपनाने का आह्वान: डॉ. शर्मा ने छात्रों से आग्रह किया कि वे अपने सहपा. ठियों में एकांतवास, व्यवहार में बदलाव, आत्म–देखभाल की कमी या निराशा की भावनाओं जैसे चेतावनी संकेतों पर ध्यान दें और बिना किसी हिचकिचाहट के पेशेवर मार्गदर्शन लें। उन्होंने परस्पर सहयोग की संस्कृति विकसित करने का आह्वान किया, जिससे अनमोल जीवन को बचाया जा सके।

इसके बाद, क्लीनिकल मनोवैज्ञानिक प्रीति यादव ने मानसिक स्वास्थ्य और आत्महत्या रोकथाम पर एक सत्र आयोजित किया। उन्होंने अवसाद, अकेलापन, रिश्तों में असफलता, चिंता और भय जैसे मनोवैज्ञानिक जोखिम कारकों पर विस्तार से चर्चा की।

पीएम मोदी के जन्मदिन पर विश्वविद्यालय में रक्तदान शिविर

फरीदाबाद। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर, जे.सी. बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद ने एक नेक पहल की। विश्वविद्यालय परिसर में जिला रेड क्रॉस और तेरापंथ युवक परिषद, फरीदाबाद के सहयोग से एक भव्य रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

युवाओं में दिखा उत्साह

शिविर का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. अजय रंगा ने किया, जिन्होंने रक्तदान जैसे मानवीय कार्य में छात्रों की भागीदारी की सराहना की। उन्होंने कहा, रक्तदान एक नेक कार्य और मानवता के लिए महत्वपूर्ण सेवा है, जो छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देता है।

यह आयोजन विश्वविद्यालय की यूथ रेड क्रॉस सेल और जिला रेड क्रॉस, फरीदाबाद के तकनीकी सहयोग से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। छात्र कल्याण डीन प्रो. प्रदीप डिमरी ने भी इस अवसर पर मौजूद रहकर छात्रों को रक्तदान के लिए प्रेरित किया।

रक्तदाताओं को किया सम्मानित

रेड क्रॉस सोसाइटी की मेडिकल टीम ने रक्तदान प्रक्रिया का संचालन किया,

जिसमें स्वच्छता और सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा गया। शिविर में 200 से अधिक स्वयंसेवकों ने रक्त दान किया, जिसमें छात्राओं की भागीदारी विशेष रूप से सराहनीय रही। सभी रक्तदा. ताओं और स्वयंसेवकों को प्रो. अजय रँगा द्वारा प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। कुलगुरु प्रो. राजीव कुमार ने वाईआरसी की इस पहल की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन छात्रों को समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराते हैं।

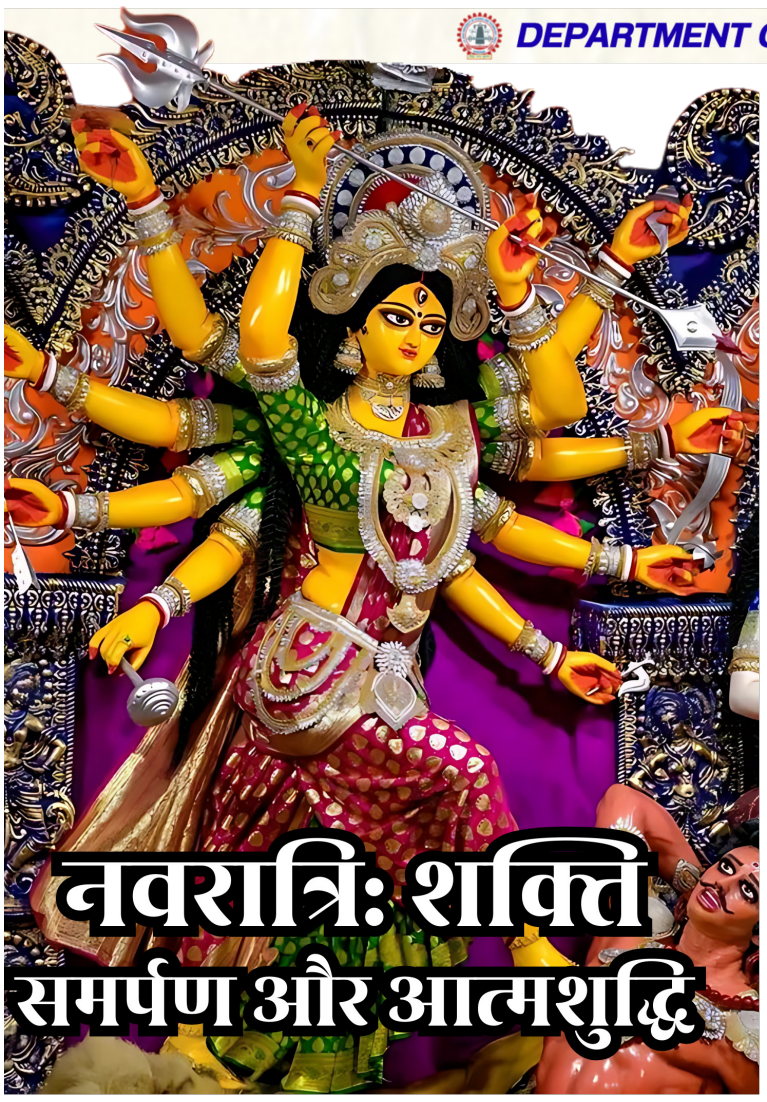

नवरात्रिः शक्ति समर्पण और आत्मशुद्धि

पूजा सौरात।

रात के अंधेरे को दीपक जैसे मि. टाते हैं, वैसे ही नवरात्रि हमें यह संदेश देती है कि जीवन के संघर्ष चाहे जितने भी गहरे क्यों न हों, अगर आत्मशक्ति पर विश्वास रखा जाए तो हर कठिनाई को परास्त किया जा सकता है। शक्ति का यह पर्व हमें बाहरी सजावट और परंप. राओं से आगे बढ़कर भीतर झाँकने की प्रेरणा देता है।

शक्तिः जीवन का सोत

नवरात्रि का पर्व माँ दुर्गा के नौ रूपों की पूजा से संबंधित है। इनमें प्रत्येक रूप अपनी विशेष शक्ति को दर्शाता है। शक्ति का मतलब केवल शारीरिक ताकत नहीं है, बल्कि यह मानसिक, आत्मिक और आध्यात्मिक शक्ति का भी प्रतीक है।

समर्पणः जीवन का सत्य

जिस तरह माँ दुर्गा की उपासना करते हैं, वह समर्पण का प्रतीक है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि जीवन में यदि हमें किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करना है, तो हमें समर्पण की भावना को आत्मसात करना होगा। समर्पण का अर्थ है कि हम अपनी आत्मा और कर्म को ईश्वर के प्रति समर्पित करें।

आत्मशुद्धिः नकारात्मकता से मुक्ति

व्रत हमें न केवल शारीरिक शुद्धि प्रदान करते हैं, बल्कि यह मानसिक शुद्धि का भी एक उत्तम माध्यम हैं। जब हम आहार के प्रति अपने संयम को बढ़ाते हैं, तो मस्तिष्क और आत्मा भी शुद्ध होती है। यह आत्मशुद्धि हमें जीवन के सभी क्षेत्र में सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करती है।

भारत को एकता के सुंदर धागे में बुनता रोशनी का पर्व

दिवाली सिर्फ एक त्योहार नहीं, बल्कि भारत की आत्मा की झलक है। यह वही पल है जब पूरा देश, चाहे गाँव हो या शहर, झोपड़ी हो या महल, एक ही रंग में रंगा नजर आता है-खुशियों, रोशनी और उम्मीदों के रंग में। दिवाली की खासियत यही है कि यह अमीरी-गरीबी की दीवारों को तोड़ देती है। हर घर, चाहे छोटा हो या बड़ा, दीपों से जगमगाता है और हर आँगन में मिठास और अपनापन घुल जाता है।

जरा सोचिए, जब आसमान से ड्रोन के नजरिए से दिवाली को देखा जाता है, तो कैसा अद्भुत नजारा सामने आता होगा। लाखों-क. रोड़ों घरों में टिमटिमाते दीये ऐसे लगते हैं मानो धरती पर सितारों की बारात उतर आई हो। पूरा भारत उस क्षण में एक परिवार बनकर चमकता है। यह दृश्य सिर्फ आँखों को नहीं, बल्कि दिल को भी छू जाता है। जैसे कोई बारात निकल रही हो और दूल्हा-दुल्हन की जगह खुशियाँ, उम्मीदें और सपने सजकर सड़कों पर उतर आए हों।

मिठास बांटें, लेकिन शोर नहीं रोशनी फैलाएं, लेकिन प्रदूषण नहीं

दिवाली खुशियों का, रोशनी का और एकता का त्योहार है। यह वह क्षण होता है जब पूरा भारत दीपों से जग. मगाता है और हर चेहरा मुस्कान से भर जाता है। लेकिन अफसोस, पिछले कुछ वर्षों से यह त्यौहार अपने साथ खुशियों के बजाय प्रदूषण की काली परछाइयाँ भी लेकर आता है। पटाखों की गड़ग. ड़ाहट, धुएँ की मोटी परत और जहरीली गैसें हमारे उत्सव की खूबसूरती को धूमिल कर देती हैं। नतीजा यह होता है कि त्योहार के बाद की सुबह लोग आँखों में जलन, साँसों में तकलीफ और दमघोंटू धुंध के साथ उठते हैं। क्या यही है दिवाली की असली तस्वीर?

आज वक्त आ गया है कि हम इस सोच को बदलें और दिवाली को उसके

असली रूप में मनाएँ 'प्रदूषण मुक्त दिवाली'। आज विज्ञान और तकनीक ने हमें विकल्प दिए हैं 'ग्रीन क्रैकर्स', जो सामान्य पटाखों की तुलना में 30 फीसदी कम प्रदूषण करते हैं। लेकिन सच यह है कि सबसे अच्छा विकल्प है, पटाखों से दूरी बनाना। दीयों, फूलों मोमबत्तियों, और पर्यावरण अनुकूल रंगोलियों के साथ दिवाली का मजा कई गुना बढ़ाया जा सकता है। त्योहार पटाखों से नहीं, बल्कि अपनेपन, मिठा. इयों और रिश्तों की मिठास से खास बनता है। प्रदूषण मुक्त दिवाली का अर्थ है कि हम पशु–पक्षियों और बुजुर्गों की चिंता करें। पटाखों की तेज आवाज अस्थमा और हृदय रोग से पीड़ित लोगों के लिए यह परेशानी का सबब बन जाती है। यदि हम उनके बारे में सोचें तो यह दिवाली वास्तव में करुणा और संवेदनशीलता का प्रतीक बन जाएगी। आइए इस बार एक नया संकल्प लें 'दीये जलाएँ, लेकिन धुआँ नहीं, मिठास बाँटें, लेकिन शोर नहीं, रोशनी फैलाएँ, लेकिन प्रदूषण नहीं।'

विशेषताओं के संयोग वाले दशहरा पर्व पर दें सहयोग एवं समर्पण की आहुति

भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है। जिसमें दशहरा पर्व का अपना ही महत्व है। इस बार का दशहरा विशेष है। इसकी विशेषताओं में 2 अक्टूबर का संयोग शामिल है। इस तिथि पर देश के राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गांधी व जय जवान जय किसान जैसे प्रेरित का उद्घोष करने वाले पूर्व प्रधानमंत्री एवं मां भारती के लाल बहादुर शास्त्री का जन्मदिन भी है। जिन्हे कृतज्ञ राष्ट्र श्रद्धासुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि देकर उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प दोहराया है। इस दशहरा पर्व के दिन ही विश्व के सबसे बड़े अनुशासित राष्ट्रवादी संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना हुई। आरएसइस को इस दशहरा के दिन 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। संघ सेवाकाल के शताब्दी वर्ष पर फिर से श्श्अखंड भारत और विश्व गुरुश्श जैसे संकल्प को स्मरण एवं विश्लेषण किया जाएगा।

दशहरा पर्व को बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। यह जीत

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम द्वारा अताताई (राक्षस) रावण के वध की गाथा वाला त्यौहार नहीं बल्कि वर्तमान संदर्भ में समाज की सभी कुरूतियों को दूर कर अपनी मन –बुद्धि में आने वाली तमाम तरह की बुराइयों को दूर कर (नष्ट) सत्य के मार्ग पर चलकर भारत राष्ट्र को परम वैभव पर पहुंचाने के लिए संकल्प को दोहराने का पर्व भी है।

दहशरा पर्व के कुछ दिन शेष हैं, लेकिन इसबार बार विशेषताओं से भरे संयोग भी हैं। तेजी से बढ़ते नये भारत में सभी सुरक्षित रहने के अनुभव के साथ मिलकर एकजुटता से आगे बढ़ने के लिए पूरी दुनिया हमारे देश के सफल एवं दूरदर्शी नेतृत्व वाली सोच की ओर बड़ी उम्मीद से टकटकी लगाए देख रही है। इस दशहरा पर्व पर हम सभी कुछ स्मरण रखते हुए अपने विश्व कुटुंबकम, सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया के साथ स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता जैसे संकल्प लेकर विश्व के नेतृत्व करने वाले महायज्ञ में अपने सहयोग एवं समर्पण की आहुति अवश्य डालें। तभी समस्त बुराइयों का नाश होगा।

छठ पूजाः उपवास, शारीरिक शुद्धि और मानसिक संतुलन का त्रिवेणी संगम

छठ पूजा भारतीय संस्कृति का एक अहम पर्व है,। जिसमें उपवास, स्नान, और संकल्प की महत्वपूर्ण भूमिका है। छठ पूजा के दौरान लोग उपवास रहते हैं, शारीरिक शुद्धि और मानसिक संतुलन की दिशा में प्रयास करते हैं, जिससे यह पर्व न केवल धार्मिक, बल्कि शारीरिक और मानसिक सुधार का भी प्रतीक बनता है।

उपवास एक ऐसी साधना है, जो हमें आत्म–नियंत्रण और संयम का पाठ पढ़ाती है। जब हम उपवासी रहते हैं, तो शरीर को आराम मिलता है, जिससे विषाक्त पदार्थ बाहर निकलते हैं और शरीर पुनः ऊर्जा से भर जाता है।

उपवास से शारीरिक शुद्धि होती है, जि. ससे पाचन तंत्र की कार्यक्षमता में सुधार होता है और शरीर की प्राकृतिक शक्ति को फिर से संचित किया जाता है। इसके साथ ही, उपवास के दौरान ध्यान और साधना के माध्यम से मानसिक संतुलन भी बनाए रखा जाता है। यह हमें आंतरिक शांति, मान. सिक स्थिरता और सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है। जब हम शरीर की सफाई करते हैं, तो यह हमारे मन को भी शुद्ध करता है, जिससे मानसिक तनाव, चिंता व अवसाद से मुक्ति मिलती है। उपवास, शारी. रिक शुद्धि और मानसिक संतुलन का त्रिवेणी संगम एक आदर्श तरीका है जीवन को संतुलित और समृद्ध बनाने का। छठ जैसे पर्व इन तीनों तत्वों का महत्व समझाते हैं।